राजा रवि वर्मा की इंदुलेखा

स्रोत : द हिंदू

- **प्रसिद्ध कलाकार** राजा रवि वर्मा (29 अप्रैल, 1848) **की 176वीं जयंती** के अवसर पर, उनकी प्रतिष्ठित पेंटिंग "इंदुलेखा" की प्रथम वास्तविक प्रति का अनावरण कलाकार के जन्मस्थान त्रावणकोर के किलिमिनूर पैलेस में हुआ।
- **ओ. चंदू. मेनन के मौलिक मलयालम उपन्यास** के नायक का चित्रण इंदुलेखा, क्षेत्र में प्रारंभिक आधुनिक साहित्य के प्रतीक के रूप में सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्त्व रखता है।
  - इंदुलेखा की अप्रकाशित पेंटिंग ने 2022 में सार्वजनिक होने पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया।
- राजा रवि वर्मा को **आधुनिक भारतीय कला का जनक** माना जाता है, क्योंकि उन्होंने **भारतीय प्रतिमा विज्ञान को पश्चिमी यथार्थवाद** के साथ जोड़ा था। उनका प्रभाव कला, साहित्य, विज्ञापन, कपड़ा और हास्य पुस्तकों जैसे विविध क्षेत्रों में देखा जाता है।
- केरल के एक कुलीन परिवार में जन्मे राजा रवि वर्मा ने 22 वर्ष की उम्र में अपने पेशेवर कला कॅरियर की शुरुआत की और **तेल चित्रकला** में महारत हासिल की।
  - वर्मा **तेल रंगों का उपयोग करने वाले पहले भारतीय कलाकारों** में से थे और उन्हें **भारत में चित्रकला के यूरोपीय शाखा का प्रतिनिधि माना जाता है।**
- वर्मा ने शाही संरक्षण के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा बनायी, उन्हें **महाराणा फतेह सिंह और** सयाजीराव गायकवाड़ III **से** कई विशेष उपहार भी प्राप्त हुये।
- **कृतियाँ:** दमयंती हंस से बात करती हुयी, शकुंतला दुष्यंत को खोजती हुयी, नायर महिला(भारतीय राज्य केरल की हिंदू जाति) अपने बालों को सजाती हुयी, तथा शांतनु एवं मत्स्यगंधा।
- **मान्यता:** 1904 में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा **कैसर-ए-हिंद स्वर्ण पदक** और 2013 में **बुध ग्रह पर एक क्रेटर का नाम** उनके सम्मान में रखा गया था।

Read more: Raja Ravi Varma

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/raja-ravi-varma-s-indulekha